संघनित पाठ्यपुस्तक

हिंदी

कक्षा स्तर : 3–6

आयु वर्ग अनुसार प्रवेशित विद्यार्थियों हेतु

राजकीय विद्यालयों में निःशुल्क वितरण हेतु

राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर

प्रथम संस्करण

पेपर उपयोग :

प्रकाशक :

मुद्रक:

मूल्य :

मुद्रण संख्या :

सर्वाधिकार सुरक्षित

पाठ्यपुस्तक निर्माण
वित्तीय सहयोग:
यूनिसेफ राजस्थान, जयपुर

आमुख

राज्य में निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम अप्रेल 2010 से लागू हो चुका हैं। उक्त अधिनियम के अनुसार 6 से 14 वर्ष के बालक–बालिकाओं को प्रांरभिक शिक्षा उपलब्ध कराना राज्य सरकार का दायित्व है तथा शिक्षा से वंचित बालक–बालिकाओं को कक्षा के अनुरूप सीखने के समान स्तर पर लाने हेतु विशेष प्रशिक्षण की व्यवस्था करना आवश्यक है। इसी उददेश्य से राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान द्वारा शिक्षा से वंचित बालक–बालिकाओं को शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने हेतु इन संघनित पाठ्यपुस्तकों को तैयार किया गया है। इन पुस्तकों को तैयार करते समय पिछली कक्षाओं के पाठ्यक्रम तथा दक्षताओं का ध्यान रखा गया।

5 से 6 साल की उम्र होने पर बच्चे औपचारिक शिक्षा प्राप्त करना आरम्भ करते हैं। वर्षों से स्कूली शिक्षा के पाठ्यक्रम आयु और कक्षाओं की निश्चित संगति के अनुसार बनाए जाते रहे हैं। शिक्षा के अधिकार अधिनियम के संदर्भ में हमारे स्कूलों में ऐसे बच्चे प्रवेश लेंगे जो स्कूली शिक्षा प्रारम्भ करने की सामान्य आयु से 2 से 7 वर्ष तक बड़ी आयु के हो सकते हैं। इन बच्चों को आयु के अनुसार सीधे ही आयु अनुरूप कक्षा में नामांकित किया जाएगा। इन बालकों का भाषाई कौशल व व्यावहारिक ज्ञान, आरंभिक कक्षाओं के सामान्य बच्चों से उच्चतर होता है। इसी धारणा को ध्यान रखते हुए इन बच्चों के लिए विभिन्न विषयों की पाठ्यसामग्री तैयार की गई। अपेक्षा यह है कि बच्चे एक पुस्तक में सम्मिलित अवधारणाओं–कौशलों को अपनी आयु एवं स्तर के अनुसार 3 से 6 माह की अवधि में अर्जित कर सकेंगे। इससे उनकी सीखने की गति भी बढ़ेगी।

प्रस्तुत पुस्तक को सर्वांग परिपूर्ण बनाने का पूरा–पूरा प्रयास किया गया है। राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान (एस.आई.ई.आर.टी.), उदयपुर इस पुस्तक के विकास में सहयोग के लिए एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली, राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल जयपुर, लेखकों, समाचार पत्र–पत्रिकाओं, पुस्तकों के संपादको प्रकाशकों तथा विभिन्न वेबसाइट्स के प्रति आभार व्यक्त करता है। हमारे पर्याप्त प्रयासों के बावजूद किसी लेखक, प्रकाशक, संस्थान आदि का नाम छूट गया हो तो हम उनके भी आभारी है।

पाठ्यपुस्तक की गुणवत्ता की अभिवृद्धि के लिए श्री नरेशपाल गंगवार, शासन सचिव

स्कूल शिक्षा, डॉ जोगाराम, आयुक्त राजस्थान प्रारंभिक शिक्षा परिषद् जयपुर, निदेशक प्रारंभिक एवं निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान सरकार का मार्गदर्शन संस्थान को सतत प्राप्त होता रहा है। एतदर्थ संस्थान आभार व्यक्त करता है।

इस पाठ्यपुस्तक का निर्माण यूनिसेफ के वित्तीय एवं तकनीकी सहयोग से हुआ है जिसके लिए संस्थान आभारी है।

मुझे आशा है कि राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान उदयपुर द्वारा तैयार कराई पाठ्यसामग्री शिक्षा से वंचित वर्ग के बालक–बालिकाओं में कक्षानुसार दक्षता विकसित करने में तथा उन्हें शिक्षा की मुख्यधारा में जोड़ने में उपयोगी सिद्ध होगी।

निदेशक
राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं
प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

संरक्षक : रूक्मणि रियार, निदेशक, रा.रा.शै.अ.प्र.सं, उदयपुर

सह संरक्षक : सुभाष शर्मा, विभागाध्यक्ष, शिक्षाक्रम एवं मूल्यांकन विभाग

मुख्य समन्वयक : वनिता वागरेचा, व्याख्याता, रा.रा.शै.अ.प्र.सं, उदयपुर

समन्वयक : वनिता वागरेचा, व्याख्याता, रा.रा.शै.अ.प्र.सं, उदयपुर

सह समन्वयक : डॉ. विमलेश कुमार पारीक, अध्यापक, रा.मा.वि., ढींढा, दूदू, जयपुर

लेखकगण : डॉ. सुजाता शर्मा, प्रधानाचार्य, रा.बा.उ.मा.वि., खंडार, सवाईमाधोपुर

डॉ. गोविन्दनारायण कुमावत, प्रधानाचार्य, रा.आ.उ.मा.वि., ड्योढ़ी, जयपुर

अंजलि कोठारी, व्याख्याता, डाइट, उदयपुर

सीताराम शर्मा, प्रधानाचार्य, रा.उ.मा.वि., लूलवा, मसूदा, अजमेर

डॉ. मूलचंद बोहरा, उपनिदेशक, आर.टी.ई., प्रा.शिक्षा निदेशालय, बीकानेर

डॉ. मदन गोपाल लढा, व्याख्याता, रा.उ.मा.वि., लूणकरनसर, बीकानेर

यशोदा दशोरा, ए.बी.ई.ओ, कार्यालय जि.शि.अ., प्रा.शि., उदयपुर

डॉ. कृष्णकांत चौहान, अध्यापक, रा.उ.मा.वि., लकापा, सलूम्बर, उदयपुर

तोषी सुखवाल, अध्यापक, के.जी.बी.वी., मावली, उदयपुर

आवरण एवं सज्जा : डॉ. जगदीश कुमावत, व्याख्याता, एस.आई.ई.आर.टी, उदयपुर

राजाराम व्यास, व्याख्याता (संविदा), एस.आई.ई.आर.टी, उदयपुर

चित्रांकन : योगेश अमाना, अध्यापक, रा.उ.प्रा.वि, उपली ओड़न, नाथद्वारा

तकनीकी सहयोग : हेमन्त आमेटा, व्याख्याता, एस.आई.ई.आर.टी, उदयपुर

कम्प्यूटर ग्राफिक्स : सीमा प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनर्स, उदयपुर

शिक्षकों से...

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 तथा निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम 2009 के द्वारा यह स्पष्ट है कि समस्त शिक्षण प्रक्रियाओं में विद्यार्थी केन्द्र के रूप में है तथा प्रत्येक बालक महत्वपूर्ण है। उक्त अधिनियम के अनुसार 6 से 14 वर्ष के बालक–बालिकाओं को प्रारंभिक शिक्षा उपलब्ध करवाना राज्य सरकार का दायित्व है; साथ ही वंचित बालक–बालिकाओं को समान स्तर पर लाने हेतु विशेष प्रयास करना आवश्यक है।

इसी विशेष प्रयास की कड़ी में शिक्षा से वंचित बालक–बालिकाओं को शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने हेतु संघनित पाठ्यसामग्री तैयार की गई है।

आमतौर पर बच्चे 5–6 वर्ष की आयु में औपचारिक शिक्षा प्रारंभ करते हैं और आगे बढ़ते रहते हैं, लेकिन अधिनियम की धारा 25 के तहत विद्यालयों में बड़ी संख्या में विद्यार्थी आयु के अनुसार सीधे ही बड़ी कक्षाओं में प्रवेश पा रहे हैं। बड़ी उम्र होने के कारण इन बच्चों की मानसिक योग्यता, भाषाई कौशल, व्यावहारिक ज्ञान आदि आरंभिक कक्षाओं के सामान्य बच्चों से उच्चतर है। फिर भी पढ़ना–लिखना सीखने के लिए पठन–लेखन की दक्षताओं के माध्यम से विषय के अध्ययन हेतु कौशल अर्जित करने के लिए उन्हें एक सुव्यवस्थित पाठ्यक्रम पर कार्य करने की आवश्यकता है। उनकी उच्चतर भाषायी क्षमता और परिवेशीय अनुभव के आधार पर यह कार्य अधिक सारपूर्ण एवं त्वरित गति से सम्पन्न किया जा सकता है। इन्हीं संभावनाओं व धारणाओं को ध्यान रख कर हिन्दी भाषा की पुस्तकें विशेष पाठ्यसामग्री के रूप में तैयार की गई है।

पुस्तकों का विभाजन संघनित पाठ्यपुस्तक कक्षा स्तर 1 व 2, कक्षा स्तर 3, कक्षा स्तर 3 से 4, कक्षा स्तर 3 से 5, कक्षा स्तर 3 से 6, कक्षा स्तर 3 से 7 के अनुरूप किया गया है। जिनका शिक्षक बच्चे की आधाररेखा आकलन करने पर प्राप्त स्तर के अनुरूप शिक्षण के दौरान उपयोग कर सकेंगे। उक्त पुस्तकों में राज्य सरकार द्वारा निर्धारित कक्षावार पाठ्यक्रमणीय उद्देश्य एवं गतिविधियों को सम्मिलित व व्यवस्थित करने का प्रयास किया गया है। प्रत्येक बच्चे की सीखने की गति व स्तर भिन्न–भिन्न होते हैं लेकिन यह अपेक्षा की गई है कि प्रत्येक पुस्तक में सम्मिलित अवधारणाओं–कौशलों को 3 से 6 माह में अर्जित कर सकेंगे।

इन पुस्तकों की विषयवस्तु एवं प्रसंग बच्चों के सामान्य परिवेश से लिए गए हैं। प्राकृतिक परिघटनाएँ, पशु–पक्षी, सामाजिक चेतना, साँस्कृतिक गौरव, मूल्यों का विकास, स्वास्थ्य, देश–प्रेम, संवेदनशीलता आदि को सम्मलित किया गया है। विविधताओं को समेटने हेतु विषयगत एवं विधागत दोनों रूपों के समावेश का प्रयास है। साथ ही साथ जीवंत चित्रों के माध्यम से समस्त पाठ्यसामग्री को सुरुचिपूर्ण बनाने का प्रयास भी किया गया है।

चूँकि ये बच्चे बोली में भाषाई समझ व कौशलों से संपन्न होते हैं; लेकिन हिंदी की मानक शब्दावली, उनके वर्ण–ध्वनियों के सटीक उच्चारण व वाक्य संरचनाओं के लिखित रूप से अपरिचित होते हैं। अतः पुस्तकों में पाठों की संख्या सीमित रखी गई है और उक्त कौशलों के संवर्धन हेतु लेखन–पठन की क्षमता वाली गतिविधियों का समावेश अधिक किया गया है।

पुस्तकों पर काम करने के दौरान बच्चों का मूल्यांकन सतत् एवं व्यापक होगा। इसके लिए राज्य में प्रचलित मूल्यांकन के दस्तावेजों को संधारित किया जाना अपेक्षित है। इसके माध्यम से शिक्षक सीखने–सिखाने की प्रक्रिया के दौरान ही बच्चे के सीखने की स्थिति, प्रगति एवं आवश्यकताओं का समुचित आकलन कर योजना तैयार करते हुए कार्य कर पाएँगे।

इस पाठ्यसामग्री को उक्त बच्चों के लिए एक प्रशिक्षण मॉड्यूल की तरह विकसित किया गया है। शिक्षक कक्षा–कक्ष में विभिन्न स्तर के बच्चों के साथ कार्य कर रहे हैं, इस हेतु भी यह पाठ्यसामग्री उसके कार्य को सहज एवं व्यवस्थित करने में मदद करेंगी।

अनुक्रमणिका

क्र.स.	पाठ का शीर्षक	विधा	पृष्ठ संख्या
1.	देश की माटी	कविता	1–3
2.	अजमेर की यात्रा	यात्रा वृत्तांत	4–9
3.	कागा, मूषक टोपी ले ली!	कहानी	10–16
	सँवारे रूप भारत का	कविता (पढ़ने के लिए)	17
4.	क्रांतिकारी परिवार	निबंध	18–22
5.	नारी शक्ति की प्रतीक– भगिनी निवेदिता	जीवनी	23–27
6.	मच्छड़बाबू	संवाद पाठ	28–33
	भाषा की पहेलियाँ	पहेलियाँ (पढ़ने के लिए)	34
7.	धरती धोरां री	कविता	35–41
8.	चंबल की कहानी	आत्मकथा	42–48

अध्याय 1

देश की माटी

देश की माटी, देश का जल।
हवा देश की, देश के फल ।
सरस बनें प्रभु, सरस बनें।।

देश के घर और देश के घाट।
देश के वन और देश के बाट।
सरल बनें प्रभु, सरल बनें।।

देश के तन और देश के मन।
देश के घर के भाई–बहन।
विमल बनें प्रभु, विमल बनें।।

देश की इच्छा, देश की आशा।
देश की शक्ति, देश की भाषा।
एक बनें प्रभु, एक बनें।।

देश की माटी, देश का जल।
हवा देश की, देश के फल।
सरस बनें प्रभु, सरस बनें।।

रवीन्द्रनाथ टैगोर

निर्देश–भारत देश की विशेषताओं पर चर्चा करें। कविता को सस्वर गाएँ और गवाएँ।

अभ्यास कार्य

शब्दार्थ

सरस	–	रसवाला, मोहक, अच्छा
घाट	–	तट के आस–पास का सीढ़ीदार स्थान
बाट	–	रास्ता
विमल	–	निर्मल, स्वच्छ

उच्चारण के लिए

प्रभु, देश, भाई–बहन, इच्छा

सोचें और बताएँ

1. सरस बनने के लिए किससे निवेदन किया गया है ?
2. देश के तन और मन को क्या बनने के लिए कहा गया है ?
3. वन और बाट कैसे होने चाहिए ?

लिखें

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(भाई–बहन, सरस, इच्छा, फल)

(क) हवा देश की देश के ..... ।

(ख) सरस बनें प्रभु ..... बनें।

(ग) देश के घर के ..... ।

(घ) देश की ....., देश की आशा।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. देश की माटी व जल कैसे होने चाहिए ?
2. किस–किस को विमल बनने के लिए कहा गया है ?
3. देश की भाषा और देश की शक्ति के लिए क्या कहा गया है ?

भाषा की बात

- **नीचे कुछ शब्द और उनके विपरीत अर्थ वाले शब्द दिए जा रहे हैं, उन्हें रेखा खींचकर मिलाएँ–**

आशा	अनिच्छा
इच्छा	निराशा
शक्तिशाली	विदेश
देश	नीरस
सरस	कमजोर

- **नीचे लिखे शब्दों से खाली जगह भरकर कहानी बनाइए तथा पढ़िए–**

कौआ, कम पानी, घड़ा, प्यासा, ऊपर आया, प्यास बुझ गई, कंकड़, पानी पीया

एक ..... था। वह ..... था। उसने ..... देखा। घड़े में ..... था। उसने ..... डाले। पानी .....। कौए ने .....। उसकी .....।

यह भी करें

- इस कविता को हाव–भाव के साथ अपनी कक्षा में सुनाइए।
- चित्र पूरा कर रंग भरिए–

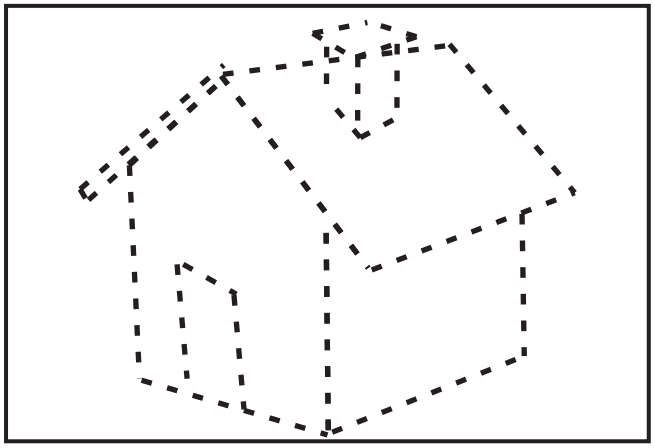

हँसिए–पिता पुत्र से – आज तुम स्कूल क्यों नहीं गए?
पुत्र – कल स्कूल में हमें तोला गया था, आज कहीं बेच न दें; यह सोचकर मैं स्कूल नहीं गया।

अध्याय 2

अजमेर की यात्रा

गुरमीत अजमेर घूमना चाहता था। उसने रज्ज़ाक को लिखा था कि वह उसी के घर ठहरेगा। उसका घर दरगाह बाज़ार में है। आज सवेरे जब गुरमीत रेलगाड़ी से उतरा, तो रज्ज़ाक उसे अपने डिब्बे के सामने ही मिल गया। उतरते ही उसने पहली बात यही कही, ''दोस्त, आज तो रेलगाड़ी में मेरा कचूमर ही निकल गया। कितनी भीड़ रहती है इस रेलगाड़ी में।''

''रमज़ान के महीने में अगर तुम यहाँ आना चाहो तो सोच–समझ कर ही आना। यों भी एकदम सींकिया पहलवान हो तुम।'' रज्ज़ाक ने हँसते हुए जवाब दिया।

''क्या उस समय और भी अधिक भीड़ हो जाती है ?''

''अरे, पूछो ही मत! उस समय अजमेर की आबादी में कम से कम एक लाख लोग और जुड़ जाते हैं। यात्रियों के लिए बहुत–सी व्यवस्थाएँ की जाती हैं। सड़कों पर, बाजारों में, जहाँ देखो वहाँ भीड़–ही–भीड़ हो जाती है।''

''तुम्हारे घर के पास तो मेला लगा रहता होगा ?''

''कुछ पूछो ही मत! उन दिनों तो बाज़ार जाकर सब्जी लाने में भी पहलवानी दिखानी पड़ती है।'' दोनों मित्र ज़ोर से हँस पड़े।

दरगाह शरीफ

कुछ देर बाद गुरमीत को रज्ज़ाक अजमेर की यात्रा कराने ले गया।

''यह देखो, यह सदर दरवाज़ा कहलाता है और वह सामने बुलंद दरवाज़ा। उसके भीतर ही दरगाह है। हम लोग वहीं चल रहे हैं।'' रज्ज़ाक ने बताया।

''और ये बड़े–बड़े कड़ाह ?'' बुलंद दरवाज़े के दाएँ–बाएँ दिखाते हुए गुरमीत ने पूछा।

''इन्हें 'देग' कहते हैं। इस बड़े देग में सौ मण से ज्यादा चावल का ज़रदा पक सकता है और छोटे में साठ मण। उर्स के समय वही प्रसाद बाँटा जाता है। उसे 'देग लूटना' कहते हैं। उस समय तो यहाँ कंधे से कंधा छिल जाता है। आओ आगे चलें।''

''यह बारहदरी और भीतर की मज़ार सब संगमरमर से जड़े हैं।

देखो ना, कितना अच्छा लगता है यह सब।'' गुरमीत ने प्रसन्नतापूर्वक कहा।

''हाँ, अत्यंत शांत और पवित्र। साथ ही गुलाब के फूलों की भीनी–भीनी महक भी फैल रही है।''

बाहर आकर गुरमीत ने पूछा, ''क्यों दोस्त, मज़ार पर वह चादर कैसी थी?''

यहाँ चादरें चढ़ाई जाती हैं; जब कोई मन्नत पूरी होती है।

पृथ्वीराज चौहान

अब देखो, उस पहाड़ी पर तारागढ़ है। इसके ढलान में पृथ्वीराज का स्मारक है।

''कौन पृथ्वीराज? जिन्होंने भारत पर आक्रमण करने वाले मोहम्मद गौरी को कई बार हराया था?''

''हाँ, वही, चौहान राजा जो भारत के सम्राट रहे। रज्ज़ाक, अब आनासागर चलें। रास्ते में ही सोनीजी की नसियाँ है और सुभाष बाग भी देख लेंगे।''

''वह गुंबदों वाला मकान है ना! वह महर्षि दयानंदजी का आश्रम है। यहीं पर उनकी समाधि है। जानते हो, दयानंद के नाम पर ही अजमेर के विश्वविद्यालय का नाम रखा गया है। समाधि के चारों ओर देखो, कितना सुंदर दृश्य है।''

''बहुत ही सुहावना! इस समय आना सागर में पानी भी काफी है। दूसरी पाल पर बच्चों के खेलने और झूलने के बहुत से साधन हैं और हाँ, तुम चलाना चाहो तो नाव की व्यवस्था भी है।''

''ना बाबा ना, मुझे नाव में डर लगता है। चलो थोड़ी देर बाग में बैठते हैं।''

आज तो थक गए। कल हम पुष्कर चलेंगे। गुरमीत ने प्रस्ताव रखा और फिर दोनों घर लौट पड़े लेकिन रास्ते में दाहिर सेन स्मारक देखना नहीं भूले।

सुबह पहली ही बस से पुष्कर निकले। अरावली की घाटियों में बस भागी जा रही थी। आधे घंटे में बस रुकी तो मंदिर दिखाई देने लगे।

लो आ गया पुष्कर। इधर देखो यह पुष्कर सरोवर। इसके चारों ओर घाट–ही–घाट दिखाई दे रहे हैं। यहीं नहा लेते हैं। जानते हो न, यह तीर्थराज कहलाता है। यहाँ स्नान का अपना महत्व है।

पुष्कर सरोवर

लो अब पुष्कर का ब्रह्मा मंदिर देखते हैं। यह दुनिया भर में प्रसिद्ध है। इसके दायीं ओर पहाड़ी पर जो मंदिर दिखाई दे रहा है, वह गायत्री देवी का है और बायीं पहाड़ी पर सावित्री देवी का।''

ब्रह्मा मंदिर

''यह मेला प्रांगण है। यहाँ कार्तिक मास में एकादशी से पूर्णिमा तक भारी मेला भरता है। खूब पशु खरीदे और बेचे जाते हैं। दुनियाभर से लोग आते हैं।

''लो अब पंचकुण्ड चलते हैं। वहाँ पाँच कुण्ड हैं, कहते हैं उनको पाँडवों ने बनाया था। उसके ऊपर ही गोमुख है जिससे गिरने वाला पानी एक से दूसरे कुण्ड को भरता चलता है।

वाह! पानी फालतू नहीं जाता। कुण्डों को ही भरा हुआ रखता है।

'खाना वहीं खाएँगे, मगर कोई बंदर झपट कर न ले जाए, ध्यान रखना, वहाँ खूब बंदर रहते हैं।''

अभ्यास कार्य

शब्दार्थ

मज़ार	–	पीर की कब्र
बारहदरी	–	बरामदा
रमजान	–	मुस्लिम कलेण्डर के एक माह का नाम
व्यवस्था	–	तैयारी / प्रबंध
सदर	–	मुख्य
मण	–	चालीस किलो
ज़रदा	–	चावल का व्यंजन
गुंबद	–	शिखर,
देग	–	बड़ा बरतन

उच्चारण के लिए

व्यवस्थाएँ, कार्तिक, ब्रह्मा, प्रसिद्ध, गुंबद, तीर्थराज, गायत्री, प्रांगण

सोचें और बताएँ

1. गुरमीत और रज्जाक कहाँ घूमने गए?
2. पुष्कर में किसका मंदिर है?
3. तीर्थराज किसे कहा गया है?

लिखें

नीचे लिखे वाक्यों के आगे सही (✓) या गलत (×) का निशान लगाएँ–

1. रमज़ान के महीने में कम से कम एक लाख यात्री अजमेर आते हैं। ( )
2. रज्ज़ाक मदार में रहता है। ( )
3. गुरमीत रेल से अजमेर गया। ( )
4. अजमेर की यात्रा गुरमीत ने अकेले की। ( )
5. उर्स के समय देग में बने चावल बाँटने को 'देग लूटना' कहते हैं। ( )

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. रमज़ान के दिनों में रज्जाक के मोहल्ले का प्रत्येक घर किसकी सुगंध से भर उठता है?
2. पुष्कर में दायीं ओर पहाड़ी पर किसका मंदिर है?
3. पंचकुण्डों की क्या विशेषताएँ हैं?
4. नीचे लिखे वाक्य किसने किससे कहे –

कथन	किसने	किससे
कितनी भीड़ रहती है इस गाड़ी में!		
जो भी अजमेर आता है इसे जरूर देखता है।		
बहुत सुंदर! इस तालाब में पानी भी काफी है।		

भाषा की बात

- सड़कों और बाजारों में जहाँ देखो भीड़–ही–भीड़ हो जाती है। रेखांकित शब्द एक से अधिक सड़कों और बाजारों के बारे में बता रहे हैं। इसी तरह एक से अधिक का अर्थ बताने वाले शब्दों को बहुवचन कहते हैं। आप भी नीचे तालिका में दिए गए शब्दों के बहुवचन बनाकर रिक्तस्थानों की पूर्ति कीजिए–

एकवचन	बहुवचन
बच्चा	बच्चों के खेलने और झूलने के बहुत से साधन हैं।
दिन	उन ..... बाजार जाकर सब्जी लाना भी कठिन काम है।
गुंबद	वह ..... वाला मकान है।
पांडव	कहते हैं इन कुण्डों को ..... ने बनाया था।
फूल	गुलाब के ..... की भीनी–भीनी महक फैल रही थी।

- गुरमीत और रज्जाक सुबह पहली ही बस से पुष्कर निकले। अरावली की घाटियों में बस भागी जा रही थी। पुष्कर पहुँचकर मुझे बहुत खुशी हुई। बस रुकी तो मंदिर दिखाई देने लगे। मंदिरों की सुन्दरता को देखकर मेरा मन गदगद हो गया।

ऊपर दिए गए गद्यांश में रेखांकित शब्दों को पढ़िए और समझिए। ये सभी शब्द किसी स्थान, वस्तु या भाव की जानकारी करवा रहे हैं। जो शब्द किसी प्राणी, स्थान, वस्तु या भाव का बोध कराते हैं ; उन्हें संज्ञा कहते हैं। 'गुरमीत', 'रज्जाक', 'अजमेर', 'पुष्कर' व 'अरावली' किसी व्यक्ति व स्थान के नाम हैं, अतः व्यक्तिवाचक संज्ञा हैं और 'बस', 'घाटियों' व 'मंदिर' जातिवाचक संज्ञा हैं। इसी प्रकार 'खुशी', 'सुंदरता', 'गदगद' मन के भाव हैं, अतः इन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

आप भी पाठ में आए ऐसे शब्दों को छाँटकर लिखिए–

व्यक्तिवाचक	जातिवाचक	भाववाचक
.....	.....	.....
.....	.....	.....
.....	.....	.....

यह भी करें

अजमेर के दर्शनीय स्थलों के नाम लिखिए	पुष्कर के दर्शनीय स्थलों के नाम लिखिए

हँसिए

एक बच्चे ने दूसरे बच्चे से पूछा – क्या तुम चीनी भाषा पढ़ सकते हो?

दूसरे बच्चे ने कहा – हाँ, अगर वह हिन्दी भाषा तथा अंग्रेजी में लिखी हो तो।

अध्याय 3

कागा, मूषक टोपी ले ली!

एक चूहा था। एक दिन उसको कहीं से एक मोती मिल गया। वह उसे लेकर सबके पास जाता और कहता –

''मूषक मोती–राजा!
ढोल बजाता आजा !!'

सब चूहे, गिलहरी, गौरैया, कबूतर, लोमड़ी, खरगोश उस चूहे के पास मोती देखते और उसकी तारीफ करते। एक दिन चूहा दरजी के पास गया और बोला –

''दरजी मेरी टोपी सी दे।
उसमें बढ़िया मोती जड़ दे।

दरजी ने टोपी सी दी और उस पर मोती जड़ दिया। अब तो चूहे को मजा ही आ गया!

''टोपी झालरदार, उस पर मोती आबदार!''

ऐसा गाता हुआ वह उसे पहन लेता और अकड़–अकड़कर चलता –

''मूषक मोती–राजा !
ढोल बजाता आजा !!''

सब जानवर चूहे की तारीफ करते। मगर कौए को उससे चिढ़ थी। एक दिन क्या हुआ कि चूहा तो टोपी सिर पर रखे अकड़ता हुआ जा रहा था। उधर से कौए ने झपट्टा मारा और टोपी लेकर नीम की डाली पर बैठ गया। चूहे को बहुत गुस्सा आया। वह बोला–

''कागा–कागा, टोपी दे !
टोपीवाला मोती दे !!''

कौए ने मना कर दिया, तो चूहे ने नीम से कहा –

''नीम–नीम काग उड़ा!''

नीम ने कहा, 'मैं क्यों उड़ाऊँ?''

चूहे ने कहा, ''नहीं उड़ाए तो बढ़ई से कटाऊँ। ''

चूहा बढ़ई के पास गया और बोला –

''कागा, मूषक टोपी ले ली।
बैठा नीम की डाली।

नीम काग उड़ावे नी।
कागा टोपी देवे नी।
टोपी बिना चाले नी।''

''तो मैं क्या करूँ?''
''तू नीम काट।''
''मैं नीम क्यों काटूँ?''

''नहीं काटे तो राजा से पिटवाऊँ !''

चूहा राजा के पास गया और बोला –

''राजा–राजा, बढ़ई दंड।
कागा मूषक–टोपी ले ली।
बैठा नीम की डाली।

बढ़ई नीम काटे नी।
नीम काग उड़ावे नी।

कागा टोपी देवे नी।
टोपी बिना चाले नी।''

राजा ने कहा– ''भाग, भाग, आया बड़ा टोपीवाला।''

चूहा बोला– ''टोपीवाला नहीं।

मूषक मोती– राजा !
रानी रूठे राजा !!''

वहाँ से चूहा रानी के पास गया और बोला –

रानी–रानी, राजा रूठ!

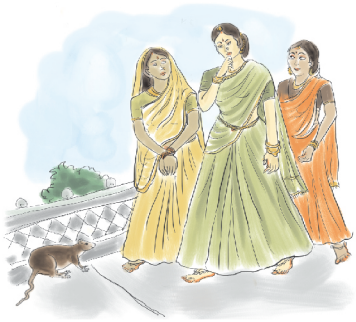

कागा मूषक–टोपी ले ली।
बैठा नीम की डाली।

बढ़ई नीम काटे नी।
नीम काग उड़ावे नी।

कागा टोपी देवे नी।
टोपी बिना चाले नी।

रानी बहुत हँसी। उसकी सखियों ने चूहे को बहुत खिजाया। तब कहा –

रानी सा तो रूठें ना !
मूषक राजा तूठें ना !!

''रानी ना रूठें तो साँप से कटाऊँ।'' कहकर चूहा साँप के पास गया।

''साँप–साँप रानी को काट।''

''क्यों?''

''कागा मूषक–टोपी ले ली।
बैठा नीम की डाली।

रानी राजा रूठे नी।
राजा बढ़ई दंडे नी।

बढ़ई नीम काटे नी।
नीम काग उड़ावे नी।

कागा टोपी देवे नी।
टोपी बिना चाले नी।''

''मैं तो रानी को नहीं काटूँ।''
''नहीं काटे तो चींटी चढ़ाऊँ।''

चूहा चींटी के पास गया और बोला –

''चींटी रानी।
बड़ी सयानी।''

एक काम तू मेरा कर दे।
तुझे साँप का भोज करा दूँ।

चींटी ने कहा –

''अपनी फौज लाती हूँ।
तेरे साथ जाती हूँ।''

चींटी हजारों की फौज लेकर चूहे के साथ चली। चींटियों की फौज देखते ही साँप घबराकर बोला –

'' मूषक राजा मुझे न मार !
रानी को डसने को मैं तैयार !!''

साँप मूषक राजा के साथ महलों की ओर चल दिया। रानी ने मूषक के साथ साँप को आते देखा तो हाथ जोड़कर बोली –

''साँप देवता मुझे न काट !
अभी रूठती हूँ, मैं पाट !!''

रानी कोप–भवन में जाने की तैयारी करने लगी।

उधर चूहा राजा के पास गया –

''राजा रानी रूठी !
राजा की बात झूठी !!''

राजा ने जाकर देखा तो रानी रूठ रही थी। वह बोला –

''रानी कोप–भवन मत जाओ !
बढ़ई को पिटवाता, आओ !!''

राजा ने बढ़ई को पीटने के लिए सिपाही भेजे। मूषक राजा के साथ सिपाही आते देखा तो वह डर गया और बोला –

'' मूषक मुझे न तुम पिटवाओ !
अभी नीम काटूँ मैं, आओ !!''

बढ़ई आरा, वसूला और कुल्हाड़ी लेकर मूषक के साथ चला। उनको आते देखकर नीम घबराया और बोला –

''बढ़ई देव विनय करता हूँ !
अभी काक में भय भरता हूँ !!''

ऐसा कहकर नीम ने अपनी डाली को जोरों से हिलाया। कौआ डर के मारे काँव–काँव करने लगा और उसकी चोंच से टोपी गिर गई।

मूषक राजा ने टोपी ले ली। सिर पर धारण की और नाचने लगा –

" मेरी टोपी झालरदार !
उस पर मोती आबदार !!

कागा नीम चढ़े सरदार !
मूषक राजा के दरबार !!"

अभ्यास कार्य

शब्दर्थ

मूषक	–	चूहा	बढ़ई	–	खाती, लकड़ी का कारीगर
आबदार	–	चमकदार	फौज	–	सेना
तारीफ	–	प्रशंसा	कोप	–	क्रोध, रोष

सोचें और बताएँ

1. टोपी पर मोती किसने जड़ा?
2. मूषक राजा से कौन चिढ़ता था?
3. साँप क्यों घबरा गया था?

लिखें

रिक्तस्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. दरजी ने टोपी सी दी और उस पर ..... जड़ दिया।
2. टोपी लेकर कौआ ..... पर बैठ गया।
3. कौआ डर के मारे ..... करने लगा।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

1. चूहा दरजी के पास क्यों गया था?
2. अन्त में चूहे की सहायता किसने की?
3. मूषक के साथ सिपाही को आता देख बढ़ई ने क्या कहा?
4. लिखिए – कौन, किससे डरा –

साँप	रानी .....
राजा	बढ़ई .....
नीम	कागा .....

भाषा की बात

- पढ़िए, समझिए और लिखिए–

एक	अनेक	अनेक
एक चूहा था	कई चूहे थे।	चूहों के बिल थे।
कौआ	कौए	कौओं के घोंसले .....।
बच्चा	.....	..... के कपड़े
बाजा	.....	..... की धुन
मोजा	.....	..... की जोड़ी
समोसा	.....	..... का ढेर
कटोरा	.....	..... में खीर

- दरजी ने टोपी सी दी और उस पर मोती जड़ दिया। वाक्य में रेखांकित शब्द'टोपी' स्त्रीलिंग व 'मोती' पुल्लिंग शब्द हैं। शब्द के जिस रूप से उसके पुरुष अथवा स्त्री जाति के होने का बोध हो उसे 'लिंग' कहते हैं। पाठ में से आप भी लिंग को व्यक्त करने वाले चार–चार शब्द लिखिए–

पुल्लिंग .....

स्त्रीलिंग.....

- झालरदार शब्द झालर और दार शब्दों से मिलकर बना है। आप भी 'दार' शब्द जोड़कर नए शब्द बनाइए –

काम	फौज	हवा	फल	शान
.....	.....	.....	.....	.....

- निम्नलिखित शब्दों को वर्णमाला के क्रम में लिखिए–

कागा	मूषक	खाती	आरा	बढ़ई	झालरदार
फौज	गाय	मोती	ईश्वर	चूहा	साँप

यह भी करें

- इस कहानी को बालसभा में सुनाइए।
- सभी लोग अलग–अलग तरह के काम करते हैं। अलग–अलग कामों को करने वालों को अलग–अलग नामों से जाना जाता हैं; जैसे– लकड़ी का काम करने वाला बढ़ई। ऐसे नीचे दिए कामों को करने वालों को क्या कहेंगे? लिखिए –

काम	नाम
जो मटकी बनाता है।	
जो बाल काटता है।	
जो बीमारी का इलाज करता है।	
जो लोहे का काम करता है।	
जो विद्यालय में पढ़ाते हैं।	
जो कपड़ों की सिलाई करता है।	

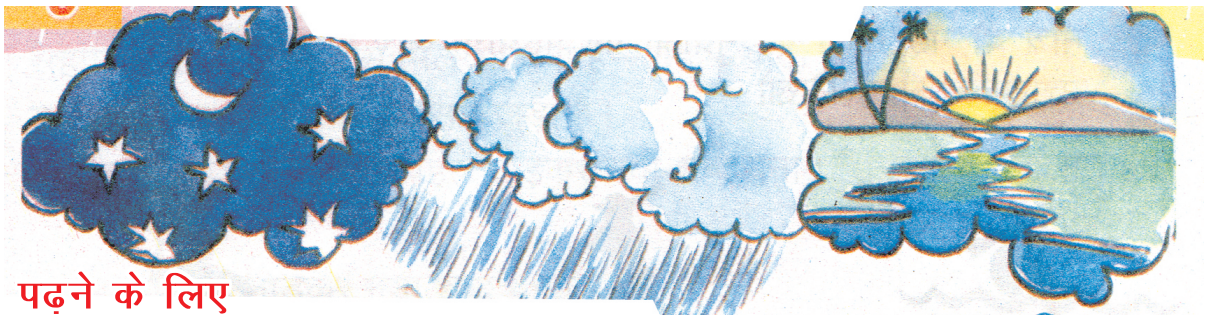

पढ़ने के लिए

सँवारें रूप भारत का

कि जैसे चाँद आकर चाँदनी के फूल बरसाता
कि जैसे मेघ आ सबके घड़ों में नीर भर जाता
करें वैसे ही हम मेहनत
सँवारें रूप भारत का।

कि जैसे भोर का सूरज धरा में रंग भरता है
कि जैसे फूल खिलकर के हवा में गंध भरता है
करें वैसे ही हम मेहनत
सँवारें रूप भारत का।

कि जैसे गोद में खेतों के दाना लहलहाता है
कि जैसे काम कर मजदूर गाना गुनगुनाता है
करें वैसे ही हम मेहनत
सँवारें रूप भारत का।

कड़ी मेहनत से ही इंसान का चेहरा चमकता है।
कि सोना आग में तपकर ही कुन्दन–सा दमकता है
करें वैसे ही हम मेहनत
सँवारें रूप भारत का।

अध्याय 4

क्रांतिकारी परिवार

राजस्थान की धरती ने कई वीरों तथा आजादी के दीवानों को जन्म दिया है। देश को अंग्रेजों की दासता से मुक्त करवाने के लिए कई नौजवानों ने क्रांति का बिगुल बजाया। उन्हीं क्रांतिकारियों में से एक थे क्रांतिकारी प्रतापसिंह बारहठ! ये विप्लवी नेता शचीन्द्र सान्याल के घनिष्ठ सहयोगी थे। श्री सान्याल ने राजस्थान, उत्तरप्रदेश, पंजाब और दिल्ली में आजादी की अलख जगाई थी।

प्रतापसिंह बारहठ के पिता केसरी सिंह बारहठ शाहपुरा ठिकाना (भीलवाड़ा) के जागीरदार, अच्छे कवि और हिम्मत से काम लेने वाले स्वतंत्रता सेनानी थे।

प्रतापसिंह बारहठ

उन दिनों भारत पर अंग्रेजों का शासन था। अंग्रेजों के विरोध में बोलना, कुछ कहना बगावत समझी जाती थी। आजादी के दीवाने इन बाप–बेटों ने इसकी परवाह नहीं की। केसरीसिंह बारहठ निर्भीक और साहसी कवि थे। देश को अंग्रेजों की दासता से मुक्त कराने के लिए जोशीली कविताओं द्वारा वे जागरण का मंत्र फूँका करते थे।

कुँवर प्रताप के मन पर पिता के विचारों का गहरा प्रभाव पड़ा। उनको अन्याय का दृढ़ता से मुकाबला करने की सीख मिली थी। उनका एक ही दृढ़–संकल्प था। वे कहा करते थे–''मैं बागी नहीं हूँ–बनाया गया हूँ। असलियत कहना बगावत नहीं है।'' स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए साहस, शौर्य, वीरता, दृढ़ता के ये गुण उन्हें पिता से विरासत में मिले थे।

स्वतंत्रता के लिए अलख जगाने वाला यह एक अनोखा परिवार था। केसरीसिंह बारहठ मेवाड़ के महाराणा के विश्वस्त और स्नेहपात्र लोगों में से थे।

इस परिवार की गतिविधियों से परेशान होकर अंग्रेज सरकार ने इनको बागी घोषित कर दिया। केसरीसिंह बारहठ को गिरफ्तार कर आजन्म कारावास की सजा दी गई। इन्हीं

के भाई जोरावर सिंह भी वर्षों तक फरार रहे। घर–घर जाकर आजादी की अलख जगाते रहे। इसी परिवार के क्रांतिकारी कुँवर प्रतापसिंह थे जिन्होंने दिल्ली को अपनी गतिविधियों का केन्द्र बनाकर अंग्रेज सरकार की नींद हराम कर दी।

कोटा से सम्बन्धित एक विप्लवी केस में शामिल होने के जुर्म में केसरीसिंह बारहठ गिरफ्तार कर लिए गए। मुकदमा चला। उन्हें आजन्म काले पानी की सजा देकर जेल में डाल दिया गया। बीमारी के कारण इन्हें अण्डमान नहीं भेजा गया। विप्लवी होने के कारण इनकी पूरी जायदाद और जागीर जब्त कर ली गई। उनके भाई जोरावर सिंह को भी बागी करार देकर उनकी जायदाद भी जब्त कर ली गई। परिवार के भरण–पोषण का कोई रास्ता नहीं रहा।

इन परिस्थितियों में भी प्रतापसिंह और उनके परिवार ने हार नहीं मानी। लगातार क्रांतिकारी कार्यों में लगे रहे। कठिन से कठिन परिस्थितियों में हिम्मत से काम लेना उन्हें आता था।

प्रसिद्ध क्रांतिकारी शचीन्द्र सान्याल कहा करते थे–''मैंने प्रतापसिंह जैसे देशभक्त गिने–चुने ही देखे हैं।'' कठिन से कठिन परिस्थितियों में वे खुद तो आनन्दित रहते ही थे लेकिन जो भी उनके सम्पर्क में आता वह भी खुश हो जाता था।

प्रतापसिंह जब गिरफ्तार हुए तो अंग्रेज अफसरों ने उन्हें फुसलाने के लिए कई प्रलोभन दिये। लेकिन वाह रे देशभक्त प्रतापसिंह! जिसने यातनाएँ सह लीं परन्तु अपने साथियों के बारे में एक शब्द भी नहीं कहा। अंग्रेज अफसर भी उनसे किसी भेद का पता नहीं लगा सके।

अंग्रेजों ने इस बाईस वर्षीय क्रांतिकारी नौजवान प्रतापसिंह से कहा, ''यदि तुम सब बातें बता दो तो हम न सिर्फ तुम्हें बल्कि तुम्हारे पिता व चाचा को भी छोड़ देंगे। तुम्हारी जब्त जायदाद लौटा देंगे। तुम्हें इनाम भी देंगे। तुम्हारी माता भी रो रही है। वह भी दुःखी है। हमारी बात मान लो।''

अंग्रेजों के इन शब्दों को प्रतापसिंह ने अपने लिए अपमान माना। वे मन ही मन क्रोधित हुए और बोले–''अभी तो मुझ अकेले की माता ही दुःख भोग रही है, अगर मैं कुछ बता दूँ तो न जाने कितनी माताएँ सिर धुनेंगी। मुझसे उम्मीद मत रखो। मुझे फाँसी के तख्ते पर चढ़ा दो।''

अन्त में भारत माता के इस क्रांतिकारी सपूत ने उत्तरप्रदेश की बरेली जेल में कठोर यातनाएँ भोगते हुए दम तोड़ दिया।

पुत्र की मृत्यु का समाचार सुनकर केसरीसिंह ने यही कहा था– मैंने प्रताप को इसलिए तैयार किया था कि दासता के बंधन तोड़ने में अपने आपको न्योछावर कर दे। आज मैं प्रसन्न हूँ। मेरा प्रताप टूट गया पर झुका नहीं।''

अभ्यास कार्य

शब्दार्थ

दासता	–	गुलामी
बिगुल बजाना	–	प्रारम्भ करना
अलख जगाना	–	चेतना लाना
बगावत	–	विद्रोह
साहसी	–	साहस रखने वाला

उच्चारण करो

मुक्त, संकल्प, निर्भीक, स्नेहपात्र, दृढ़ता, विश्वस्त

सोचें और बताएँ

1. अंग्रेजों की दासता से मुक्ति पाने के लिए प्रतापसिंह बारहठ ने किसकी मदद ली?
2. प्रतापसिंह बारहठ ने कहाँ–कहाँ आजादी की अलख जगाई ?

लिखें

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. केसरीसिंह बारहठ में कौन–कौन से गुण थे ?
2. प्रतापसिंह बारहठ को अंग्रेजों ने क्या–क्या प्रलोभन दिए?
3. पुत्र की मृत्यु का समाचार जब पिता को प्राप्त हुआ तो उन्होंने क्या कहा?
4. अंग्रेजों की बात को प्रताप ने अपमान क्यों माना?

भाषा की बात

- ''अपमान'' शब्द 'अप' और 'मान' से बना है।

इसी प्रकार दिए गए शब्दों को पढ़िए और नीचे दी गई सारणी में अलग–अलग स्थानों पर लिखिए।

प्रबंध, असमान, अलगाव, प्रबल, आकार, आभारी, अपार, प्रचार, अक्षय, अटूट, आक्रोश, प्रधान, आश्रय

शुरूआत में जिनके 'अ' लगा है।	शुरूआत में जिनके आगे 'प्र' लगा है।	शुरूआत में जिनके 'आ' लगा है।
अलगाव	....	....

- नीचे लिखे वाक्यों में शब्दों का क्रम गड़बड़ा गया है। इनका क्रम ठीक करने में मदद कीजिए –

  शीला / है / खाती / चावल।

  .....

  गुस्सा / राजा / आया / को / बहुत

  .....

  बोलती / कोयल / मीठी–मीठी / है।

  .....

- 'निर्भीक' शब्द में निम्नलिखित वर्ण एवं मात्राएँ हैं –

  न्+इ+र्+भ्+ई+क्+अ

  आप भी नीचे लिखे शब्दों में आए वर्ण एवं मात्राओं को इसी प्रकार अलग–अलग लिखिए–

  केसरी .....

  दासता .....

  क्रांति .....

  संकल्प .....

- नीचे दिए शब्दों पर (ं) या (ँ) लगाइए; जैसे– छुट्टियाँ पंख

शख	दरवाजो	हवेलिया	दीवारो	बदर
पत्थरो	मटकिया	चद	शकरकद	अतर

- मेरा प्रताप टूट गया पर झुका नहीं।

  मुझसे उम्मीद मत रखो। मुझे यहाँ से जाना है।

ऊपर लिखे वाक्यों में रेखाकिंत शब्दों से किसी काम के करने या उसके होने का पता चलता है। जिन शब्दों से किसी काम के करने या होने का पता चलता है; उन्हें क्रिया शब्द कहते है।

निम्नलिखित क्रिया शब्दों का प्रयोग करके वाक्यों को पूरा कीजिए।

खाना, खेलना, हँसना, उड़ना

1. मुझे आम ..... है।
2. कबूतर आकाश ..... में है।
3. जोकर को देखकर कविता ..... लगी।
4. नीरज कबड्डी .....है।

यह भी करें

तिरंगे झण्डे का चित्र बनाइए। तिरंगे पर तीन–चार वाक्य लिखिए।

1. .....
2. .....
3. .....
4. .....

अध्याय 5

नारी शक्ति की प्रतीक–भगिनी निवेदिता

देश की बहुत कुछ कर गुजरने वाली महिलाओं से हमारा इतिहास भरा पड़ा है, परन्तु एक विदेशी महिला ने भारत के लिए जो कार्य किया, वह अनूठा है। भगिनी निवेदिता स्वामी विवेकानन्द से प्रभावित होकर उनके आह्वान पर भारत की महिलाओं को शिक्षित करने के लिए भारत आई थीं। उनका जन्म आयरलैण्ड में हुआ, परन्तु उन्होंने भारत भूमि में अपनी मातृभूमि के दर्शन किए और भारत की बेटी बनकर स्वतंत्रता आन्दोलन में क्रांतिकारी भूमिका निभाई।उनका पूरा नाम 'मार्गेट एलिजाबेथ नोबेल' था। उनके पिता का नाम 'सेमुअल रिचमण्ड़ नोबेल' व माँ का नाम 'मैरी इसाबेला' था। बचपन में ही इनके माता–पिता का देहांत हो गया था। इनका लालन–पालन नाना हमिल्टन द्वारा किया गया था। हमिल्टन आयरलैण्ड के स्वतंत्रता आन्दोलन के प्रमुख सूत्रधारों में से एक थे। मार्गेट की शिक्षा लंदन चर्च के आवासीय विद्यालय में हुई।

मार्गेट को शिक्षण का कार्य अच्छा लगता था। अतः वे 17 वर्ष की उम्र में ही एक विद्यालय में पढ़ाने लगी। वे स्वयं द्वारा विकसित पद्धति से शिक्षा दिया करती थीं। धर्म में रुचि होने के कारण वे चर्च की गतिविधियों में भी भाग लेती थीं तथा अधिकांश समय अध्ययन, मनन एवं सत्य की खोज में ही लगाती थीं ।

तभी एक घटना घटी, जो उनके जीवन को एक नया मोड़ देने वाली थी। एक संन्यासी का लंदन में आगमन हुआ। नाम था 'स्वामी विवेकानन्द'। स्वामी जी शिकागो के विश्व धर्म सम्मेलन में ख्याति अर्जित कर अपने कुछ मित्रों के आग्रह पर इंग्लैण्ड आए थे। मार्गेट की स्वामी जी से प्रथम भेंट यहीं हुई थी।

मार्गेट ने स्वामी जी के प्रवचन सुने, वाद–विवाद, तर्क–वितर्क किया और अपने आपको पूर्ण संतुष्ट कर लेने के उपरांत ही उन्होंने स्वामी जी को अपना आदर्श चुना तब स्वामी जी के आग्रह पर उसने भारत आना तय कर लिया।

भारत आकर वो अत्यधिक प्रसन्न हुई। वह गंगा के किनारे वेल्लूर मठ की एक कुटिया में दो अन्य अमेरिकन महिलाओं के साथ रहने लगीं जो स्वामी जी की शिष्याएँ थीं। स्वामी जी ने मार्गेट को नया नाम निवेदिता दिया और आग्रह किया कि वह भगवान व भारत माता के चरणों में अपना जीवन अर्पित करें।

भगिनी निवेदिता ने विवेकानन्द के उपदेशों को जन–जन तक पहुँचाने का कार्य करने के साथ–साथ कोलकाता में लड़कियों का एक स्कूल भी आरम्भ किया। वहाँ छोटी लड़कियों को पढ़ाने लिखाने के साथ–साथ मिट्टी का काम, चित्रकारी का काम आदि भी सिखाया। जब कोलकाता में महामारी फैली तो निवेदिता ने टोली बनाकर दिन–रात भूख–प्यास की चिंता किए बिना रोगियों की चिकित्सा, सेवा–सफाई आदि कार्य कर पीड़ितों की मदद की। उन्होंने अंग्रेजी समाचार पत्रों में अपील प्रसारित कर मदद माँगी व धन संग्रह भी किया। वे लेखन कला एवं बोलने में निपुण थी। इस क्षमता का उपयोग कर वे अपनी बात बड़े–बड़े समूहों तक पहुँचाने में सफल रहीं।

निवेदिता ने जब अंग्रेजों का भारतीयों के साथ बर्बरतापूर्ण व्यवहार देखा तो वे पूर्ण ताकत के साथ भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई का समर्थन करने लगीं। उन्होंने बंगाल विभाजन का विरोध किया। उन्होंने जगदीश चन्द्र बोस की उपलब्धियाँ विश्व पटल पर रखी और महर्षि अरविन्द के जेल जाने के बाद उनके 'कर्मयोगी' पत्र के लिए संपादकीय लिखने का कार्य भी करने लगीं।

उन्हें भारतीय स्त्रियाँ अधिक प्रभावित करती थीं। वे उन्हें लज्जा, विनम्रता, स्वाभिमान, सेवाभाव, निष्ठावान, ममत्व आदि की प्रतिमूर्ति दिखाई देती थीं। वे महिलाओं को लक्ष्मी बाई, अहल्या बाई के वीरतापूर्ण कार्यों की भी याद दिलाया करती थीं। उनकी दृष्टि जाति, प्रांत व भाषा आदि से ऊपर थी।

भगिनी निवेदिता ने भारत को अपनाने के बाद कभी भी यह अनुभव नहीं होने दिया कि वे एक विदेशी हैं। उन्होंने भारत के लिए जो किया उसे कोई अन्य नहीं कर सकता। वह भी स्वामी जी की तरह ही 44 वर्ष की अल्पायु में नीचे उद्धृत वेद की पावन ऋचाओं का स्मरण करती हुई संसार से विदा हो गईं।

असतो मा सद्गमयः तमसो मा ज्योतिर्गमयः मृत्योर्मा अमृतंगमयः।

अभ्यास कार्य

शब्दार्थ

आह्वान – प्रकार / बुलावा

प्रवचन – उपदेश देना

बर्बरता – क्रूरता

भगिनी – बहन

उच्चारण के लिए

क्रांतिकारी, ख्याति, विनम्रता, स्वाभिमान, प्रतिमूर्ति, निष्ठावान, उद्धृत, ऋचाएँ।

सोचें और बताएँ

1. भगिनी निवेदिता का बचपन का पूरा नाम क्या था?
2. भगिनी निवेदिता का पालन पोषण किसने किया?
3. स्वामी विवेकानन्द ने विश्व धर्म सम्मेलन में भाग लेने के लिए कहाँ गए?

लिखें

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

1. भगिनी निवेदिता ने स्वामी विवेकानन्द को अपना आद र्श कब चुना ?
2. भगिनी निवेदिता ने बालिकाओं के लिए क्या–क्या किया ?
3. भगिनी निवेदिता भारतीय स्त्रियों के कौन–कौनसे गुणों से प्रभावित हुईं ?
4. जब कलकत्ता में महामारी फैली तब भगिनी निवेदिता ने रोगियों की किस प्रकार मदद की ?

भाषा की बात

- 'वीरता' और 'पूर्ण' शब्द मिलकर, 'वीरतापूर्ण' शब्द बना। आप भी इस प्रकार 'पूर्ण' जोड़कर नए शब्द बनाएँ–

कायरता ..... बर्बरता .....

स्वतन्त्रता ..... वीरता .....

- भगिनी निवेदिता विवेकानन्द से प्रभावित हो कर भारत आ गई। उनका पूरा नाम 'मार्गेट एलिजाबेथ नोबेल' था। उन्होंने भारतीय महिलाओं को शिक्षित किया।

  उपर्युक्त गद्यांश में 'भगिनी' के स्थान पर 'उनका' 'उन्होंने' शब्द लिखे गए हैं। इन्हें सर्वनाम से जाना जाता है। जो शब्द संज्ञा की जगह प्रयुक्त किए जाते हैं वे सर्वनाम कहलाते हैं। आप भी नीचे लिखे वाक्यों में से सर्वनाम छाँटकर लिखें –

  1. राम बस में बैठा था; वह जयपुर जा रहा था।
  2. किताबों में हमें कहानी अच्छी लगती है।
  3. भयामू ! तुम कहाँ चले गये थे।
  4. भीला के साथ उसकी बहन भी पढ़ती है।

यह भी करें

- चित्रों को देखकर तीन–चार वाक्य लिखिए –

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

- पापा के पापा को दादा कहते हैं; इन्हें आप अपने घर में क्या कहकर बुलाएँगे?

पापा की माँ	.....	माँ के पापा	.....
माँ की माँ	.....	माँ के भाई	.....

पापा की बहन ..... माँ की बहन .....

पापा के छोटे भाई ..... पापा के बडे भाई .....

- मुहावरों को सुनकर मन में एक चित्र–सा बनता है। नीचे दिए गए मुहावरों में किन्हीं दो मुहावरों के चित्र बनाकर रंग भरिए।

दीया तले अँधेरा, ईद का चाँद

मुँह फुलाना तारे तोड़ना।

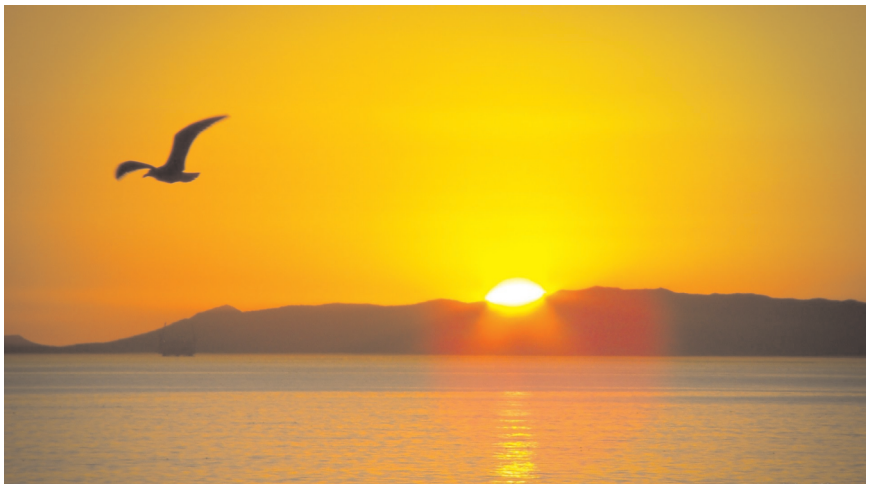

अध्याय 6

मच्छड़बाबू

पात्र

मच्छड़ बाबू : मच्छर
बालक : विद्यार्थी

(एक बालक बैठा है। दूसरा मच्छर का वेश बनाए आता है।)

मच्छड़ : भन् भन् भन् भन् भन् भन् भन्
राग सुरीले गाते हैं हम।
चूस–चूस कर खून खुशी से,
चुपके से उड़ जाते हैं हम।

बालक : आप कौन हैं? आपका राग तो बड़ा सुरीला है।

मच्छड़ : मेरा राग सुरीला है। क्यों न होगा मेरा राग सुरीला?
क्या तुम जानते नहीं कि मैं हर रोज कितना खून पीता हूँ।

बालक : क्या कहा! आप हर रोज खून पीते हैं, क्या इसीलिए आपका राग सुरीला है?

मच्छड़ : हाँ ! मुझे ऐसा लगता है कि तुम मुझे पहचानते नहीं हो।

बालक : हाँ भाई, आज तक तो मुझे तुमसे मिलने का सौभाग्य नहीं मिला।

मच्छड़ : मुझे लोग मच्छड़बाबू कहकर पुकारते हैं। मैं नालियों और पानी के गड्ढ़ों में पैदा होता हूँ। इसीलिए मुझे आप नालीप्रसाद या गड्ढ़ाचंद भी कह सकते हैं।

बालक : ओ हो! तो आप श्री नालीप्रसादजी, गड्ढ़ाचंदजी या मच्छड़बाबूजी हैं। बड़ी कृपा की आपने जो इस दास को दर्शन दिए।

मच्छड़ : (हँसते हुए) हैं हैं हैं ..... अजी इसमें कृपा की कौन–सी बात है? कृपा करना तो मेरा धंधा ही है। मैं तो ऐसी कृपा रोज बहुतों पर करता हूँ।

बालक : ओ हो ! तब तो आप बड़े परोपकारी हैं।

मच्छड़ : (हँसते हुए) हैं हैं हैं .....परोपकारी! हाँ मैं सचमुच बड़ा परोपकारी हूँ। मैं सफाई का पाठ पढ़ाता हूँ। जो लोग घर साफ़ नहीं रखते हैं, या जिनके घर के आस–पास

कीचड़ भरे गड्ढे या रुके हुए पानी की नालियाँ होती हैं, उन्हें मैं सजा देता हूँ।

बालक : क्यों महाशय, आप साफ न रहने की क्या सजा देते हैं ?

मच्छड़ : मैं कभी उनके कान या नाक में और यदि मुँह खुला मिला तो उसमें भी घुस जाता हूँ। इससे भी वे नहीं चेतते तो मैं उन्हें काटता हूँ।

बालक : वाह! वाह! निश्चय ही आप संसार का बड़ा उपकार कर रहे हैं। मच्छड़बाबू, आपको बार–बार प्रणाम है।

मच्छड़ : प्रणाम! अरे, तुम तो क्या बड़े–बड़े तक मुझे प्रणाम करते हैं। अपने बल से मैं बड़े–बड़े पहलवानों को पछाड़ देता हूँ। वह दाँव लगाता हूँ कि वे कई दिनों तक चित पड़े रहते हैं।

बालक : बड़े आश्चर्य की बात है। आप हैं तो इतने जरा–से और पहलवानों को पछाड़ देते हैं। वह कौन–सा दाँव है आपका ?

मच्छड़ : मैं उन्हें काटकर उनके खून में रोग के कीटाणु छोड़ देता हूँ। कुछ दिनों बाद उन्हें जोर से ठंड लगती है और तेज बुखार आ जाता है। इस बुखार का नाम जानना चाहते हो?

बालक : हाँ, हाँ।

मच्छड़ : इस बुखार का नाम है– मलेरिया या जूड़ीताप।

बालक : आपकी बात सुनकर तो मुझे भी ठंड लगने लगी है। मालूम होता है मानो बुखार बढ़ रहा है।

मच्छड़ : डरो मत, बैठो। देखो, मैं तुम्हें अपने दाँव से बचने का उपाय भी बताता हूँ।

बालक : (डर से काँपता हुआ) जरूर बताइए, जरूर बताइए। महाराज मच्छड़बाबू, नालीप्रसादजी, गड्ढाचंदजी, जरूर बताइए।

मच्छड़ : सुनो, मलेरिया या जूड़ीताप होने पर कुनैन और उससे मिलती–जुलती दवाइयाँ खानी चाहिए। पेट साफ रखना चाहिए।

बालक : अच्छा–अच्छा! मैं जूड़ीताप से छुटकारा पाने के लिए कुनैन और उससे मिलती–जुलती दवाइयाँ भी खाऊँगा। पेट भी साफ़ रखूँगा (पेट और पीठ पर हाथ रखता है) साथ ही साथ, आपसे बचने का उपाय भी बता दीजिए।

मच्छड़ : (हँसता है) तुम बहुत चालाक हो। अच्छा बताता हूँ। मुझसे बचने का उपाय है–

घर में स्वच्छता रखना। घर के आस–पास जो नाली और गड्ढे हों, उनमें डी.डी.टी. डालना या कोई ऐसी दवाई छिड़कना, जिससे कीटाणु मर जाते हैं।

बालक : मैं आज ही से अपने घर में बड़ी सफाई रखूँगा। घर के आस–पास नाली और गड्ढों में कीटाणु मारने की दवाई छिड़का करूँगा। पर मैं एक बात पूछना चाहता हूँ।

मच्छड़ : क्या?

बालक : मच्छरदानी से आपका क्या संबंध है?

मच्छड़ : ओफ–ओ। मच्छरदानी मेरी शत्रु है, समझे। उसे लगाकर जो लोग सोते हैं उनका खून मैं नहीं पी सकता। उन्हें मैं पछाड़ नहीं सकता। तुमने मच्छरदानी का नाम लेकर मुझे गुस्सा दिलाया है... हाँ।

बालक : (कान पकड़कर और गालों पर मारते हुए) भूल हुई। (जाते–जाते) अब मैं चलता हूँ। मुझे आपसे डर लगता है लेकिन मच्छड़बाबू! आज से मैं मच्छरदानी लगा कर सोऊँगा।

मच्छड़ : (गुस्से से धमकाता हुआ) भाग जा....नहीं तो...।

(लड़का चिढ़ाता हुआ भाग जाता है)

(पर्दा गिरता है)

बलदेव प्रसाद

अभ्यास कार्य

शब्दार्थ

सुरीला – मीठे स्वर वाला

जूड़ीताप – कँपकपी के साथ आने वाला बुखार

कीटाणु – रोग पैदा करने वाले छोटे–छोटे अणु

दर्शन – देखना, दिखाई देना

उच्चारण के लिए

कृपा, श्रीयुत, दर्शन, प्रणाम, आश्चर्य

सोचें और बताएँ

1. 'मेरा राग सुरीला है।' यह किसने किससे कहा ?
2. साफ न रहने पर मच्छड़बाबू क्या सजा देते हैं?

लिखें

सही विकल्प चुनकर कोष्ठक में लिखिए –

1. मलेरिया होने का कारण है–

   (क) कुत्ते का काटना (ख) मधुमक्खी का काटना

   (ग) मच्छर का काटना (घ) ततैया का काटना ( )

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

1. मच्छर कहाँ–कहाँ पैदा होते हैं ?
2. मच्छर पैदा नहीं हो इसके लिए हमें क्या–क्या करना चाहिए ?
3. मच्छरों से बचने के लिए हमें क्या–क्या करना चाहिए ?
4. नीचे लिखे शब्दों को उनसे संबंधित समूह में लिखिए–

   अलगोजा, पाठशाला, ड़ेंगू, लोग, राग, बुखार, पेंसिल, मलेरिया, दवाइयाँ, ढोलक, कुनैन, किताब, तबला, छात्र, सुर

चिकित्सा	शिक्षा	संगीत
ड़ेंगू		

5. किसने किससे कहा ?

क्र.स.	कथन	किसने	किससे
1	मच्छड़ बाबू, आपको बार–बार प्रणाम है।		
2	ओ हो ! तब तो आप बड़े परोपकारी हैं।		
3	इस बुखार का नाम है– मलेरिया या जूड़ीताप		
4	डरो मत, बैठो ! देखो, तुम्हें अपने दाँव से बचने का उपाय भी बताता हूँ।		
5	मच्छरदानी से आपका क्या संबंध है?		

भाषा की बात

- ''बड़े आश्चर्य की बात है। आप हैं तो इतने जरा–से और पहलवानों को पछाड़ देते हैं।'' वाक्य में 'आश्चर्य' और 'जरा' शब्द आए हैं, इनमें र के 'र्' व 'र' रूप का प्रयोग हुआ है।

जब 'र' स्वर रहित 'र्' रूप में व्यंजन के पहले आता है, तो जहाँ उच्चारित होता है, उसके आगे वाले वर्ण के ऊपर आता है; जैसे– कर्म, धर्म, वर्ण आदि।

'र' व्यंजन के रूप में स्वर सहित अपने मूल रूप में आता है; जैसे– राम, जरूर, जोर आदि।

यदि खड़ीपाई वाले हलंत व्यंजन के बाद 'र' आता है तो 'ऱ' रूप में लिखा जाता है; जैसे– प्रकाश, श्रम, भ्रम, क्रम आदि।

'र' यदि ट्, ड् के बाद प्रयुक्त होता है तो उसके हलंत के साथ जुड़कर ट्र, ड्र आदि रूप में लिखा जाता है; जैसे–ट्रक, राष्ट्र, ड्रम आदि।

आप भी 'र' के रूप वाले शब्दों की सूची बनाइए–

....

....

....

- नीचे लिखे संज्ञा शब्दों को भेदानुसार उचित शीर्षक के नीचे लिखिए–

मच्छर	मलेरिया	राग	मच्छरदानी	पानी	नाली
स्वच्छता	संसार	महकता	बुखार	कड़वा	पीठ

व्यक्तिवाचक	जातिवाचक	भाववाचक
.....	.....	.....
.....	.....	.....
.....	.....	.....
.....	.....	.....

- 'जब मुझे मच्छर ने काटा' विषय पर अपने विचार लिखिए।

यह भी करें

- आप अपने घर से मच्छरों को भगाने के लिए जो–जो उपाय करते हैं। उन पर चर्चा कीजिए।
- मच्छरों को भगाने के लिए कुछ औषधीय पौधे हैं, नीचे दी गई तालिका में उनके उपयोग की विधि लिखिए।

पौधे का नाम	उपयोग विधि
मरवा	कमरे में मरवा का पौधा लटकाने से मच्छर उस कमरे में नहीं आते हैं।
वन तुलसी	.....
नीम की सूखी पत्तियाँ	.....
.....	.....
.....	.....

पढ़ने के लिए

भाषा की पहेलियाँ

बूझो बच्चो एक पहेली, ये है हम सबकी सहेली, व्याकरण में पहले आती, सबका नाम ये कहलाती।	काम करो भई काम करो, लाती हूँ मैं ये पैगाम, सबकी हलचल देखूँ मैं, बूझो तो अब मेरा नाम ?
संज्ञा बार–बार जब आए, वाक्यों को नीरस बनाए, उसे हटा मैं वाक्य में आता, बोलो बच्चो क्या कहलाता ?	सीधा अर्थ न मुझको आता, उल्टा काम ही मुझको भाता, उलटफेर ही मेरा काम, बूझो तो सब मेरा नाम ?
ये है लाल, वो है काला, ये मीठा वो है रस वाला, भाँति–भाँति के गुण बताता, बोलो बच्चो क्या कहलाता ?	चंदा एक तारे अनेक, फूल एक भँवरे अनेक, एक–अनेक का ज्ञान कराऊँ, बोलो तो मैं क्या कहलाऊँ ?

1. संज्ञा 2. सर्वनाम 3. विशेषण 4. क्रिया 5. विलोम 6. वचन

अध्याय 7

धरती धोरां री

धरती धोरां री
धरती धोरां री,
आ तो सुरगां नै सरमावै,
ईं पर देव रमण नै आवै,
ईं रो जस नर नारी गावै,
धरती धोरां री!

काळा बादळिया घहरावै,
बिरखा घूघरिया घमकावै,
बिजळी डरती ओला खावै,
धरती धोरां री!

सूरज कण कण नै चमकावै,
चन्दो इमरत रस बरसावै,
तारा निछरावळ कर ज्यावै,
धरती धोरां री!

लुळ–लुळ बाजरियो लैरावै,
मक्की झालो दे'र बुलावै,
कुदरत दोन्यूं हाथ लुटावै,
धरती धोरां री!

पंछी मधरा–मधरा बोलै,
मिसरी मीठै सुर स्यूँ घोळै,
झीणूँ बायरियो पंपोळै,
धरती धोरां री!

मदुआ ऊंट अणूंता खाथा!
ईं रै घोड़ां री के बातां?
धरती धोरां री!
ईं रा फळ फुलड़ा मन भावण,
ईं रै धीणो आंगण–आंगण,
बाजै सगळा स्यूं बड़ भागण,
धरती धोरां री!

ईं रो चित्तौड़ो गढ़ लूंठो,
ओ तो रण वीरां रो खूंटो,
ई रो जोधाणूं नौ कुंटो,
धरती धोरां री!

आबू आभै रै परवाणैं,
लूणी गंगाजी ही जाणै,
ऊभो जयसलमेर सिंवाणै,
धरती धोरां री!

ईं रो बीकाणूं गरबीलो,
ईं रो अलवर जबर हठीलो,
ईं रो अजयमेर भड़कीलो,
धरती धोरां री!

जैपर नगर्यां में पटराणी,
कोटा–बूंदी कद अणजाणी!
चंबल कैवै आं री का'णी,
धरती धोरां री!

सोरठ बंध्यो सोरठां लारै,
भेळप सिंध आप हंकारै,
मूमल बिसर्‌यो हेत चितारै,
धरती धोरां री!

ईं पर तनड़ो मनड़ो वारां,
ईं पर जीवण प्राण उंवारां,
ईं री धजा उड़ै गिगनारां,
मायड़ कोड़ां री!

ईं नै मोत्यां थाळ बधावां,
ईं री धूळ लिलाड़ लगावां,
ईं रो मोटो भाग सरावां,
धरती धोरां री!

कोनी नांव भरतपुर छोटो,
घूम्यो सूरजमल रो घोटो,
खाई मात फिरंगी मोटो,
धरती धोरां री!

ईं स्यूं नहीं माळवो न्यारो,
मोबी हरियाणो है प्यारो,
मिलतो तीन्यां रो उणियारो,
धरती धोरां री!

ईडर पालनपुर है ईंरा,
सागी जामण जाया बीरा,
अै तो टुकुड़ा मरु रै जी रा,
धरती धोरां री!

ईं रै सत री आण निभावां,
ईं रै पत नै नहीं लजावां,
ईं नै माथो भेंट चढ़ावां,
मायड़ कोड़ां री!
धरती धोरां री!

कन्हैयालाल सेठिया

अभ्यास कार्य

शब्दार्थ

जस	–	यश
बायरिया	–	हवा
महुआ	–	मदमस्त
उणियारो	–	चेहरा
हेत	–	प्रेम
सिंवाणों	–	सीमावर्ती
धीणां	–	दुधारु पशुओं की उपलब्धता
लैरावे	–	लहराता है
आभै	–	आकाश
नारा	–	बैल
बीरा	–	भाई
अणूता	–	अत्यधिक
मायड़	–	माता

सोचें और बताएँ

1. धोरों की धरती किसे कहा गया है ?
2. कविता के लेखक का नाम बताइए।

लिखें

उचित उत्तर पर सही (✓) का निशान लगाइए–

1. लूणी नदी की तुलना की गई है। (गंगा से /यमुना से)
2. कण–कण को चमकाता है। (सूरज/चन्दा)
3. ऊँचा गढ़ है। (जोधपुर गढ़/चित्तौड़गढ़)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. भरतपुर में अंग्रेजों को किसने हराया ?
2. नगरियों की पटराणी कौनसी नगरी है ?

3. अमृत रस कौन बरसाता है ?

4. इस कविता में किस प्रदेश की महिमा का वर्णन है ?

रिक्तस्थानों की पूर्ति कविता की पंक्तियों से कीजिए–

1. आ तो.....सरमावै, ईं पर देव .....।
2. पंछी ..... बोलै, मिसरी .....घोळै।
3. ईं रो ..... हठीलो, ईं रो ..... भड़कीलो।
4. ईं नै .....बधावां, ईं री ..... लगावां।

भाषा की बात

- नीचे लिखे राजस्थानी भाषा के शब्दों वाले (क) खण्ड के शब्दों को हिन्दी शब्द वाले (ख) खण्ड के शब्दों से मिलाइए:–

(क)	(ख)
इमरत	पक्षी
जस	चन्द्र
चन्दो	अमृत
मधरा	यश
पंछी	मधुर
नांव	माता
मायड़	नाम

बोलने में सरलता के लिए हम संस्कृत शब्दों की ध्वनियों को बदल लेते हैं, इन बदली हुई ध्वनियों से बने शब्दों को तद्भव शब्द कहते हैं और हिन्दी में प्रयुक्त संस्कृत के मूल शब्दों को तत्सम शब्द कहते हैं। ऊपर (क) खण्ड में तद्भव शब्द और (ख) खण्ड में तत्सम शब्द दिए गए हैं। इसी प्रकार नीचे लिखे तद्भव शब्दों के तत्सम शब्द लिखिए–

तद्भव	तत्सम
सूरज	.....
दूध	.....

घर	.....
अँगूठा	.....
सुरगाँ	.....

- **नीचे लिखे वाक्यांशों को पढ़िए और समझिए–**

राजस्थानी भाषा	हिन्दी भाषा
धोरां री	धोरों की
सगळां स्यूँ	सबसे
वीरां रो	वीरों का
ईं री	इसकी
सुरगा नै	स्वर्ग को
मरु रै	रेगिस्तान के

उपर्युक्त वाक्यांशो में राजस्थानी में का,के,की,को,से आदि चिह्नों के लिए रो,रै,री,नै,स्यूं, चिह्नों का प्रयोग हुआ है। जो चिह्न वाक्यों में संज्ञा व सर्वनाम को क्रिया के साथ जोड़ते हैं; उन्हें कारक चिह्न कहते हैं।

हिन्दी में आठ प्रकार के कारक हैं–

कारक	**चिह्न**
कर्ता कारक	ने
कर्म कारक	को
करण कारक	से (के द्वारा)
संप्रदान कारक	के लिए
अपादान कारक	से (अलग होना)
संबंध कारक	का, के,की,ना,ने,नी,रा,रै,री
अधिकरण कारक	में, पर
संबोधन कारक	हे,अरे, ओ

आप भी कविता में से कारक युक्त पंक्तियों को छाँटिए और लिखिए।

1. कविता में लुळ–लुळ, पंपोळै, घोळै, सगळा आदि शब्दों में 'ळ' वर्ण का प्रयोग हुआ है। 'ळ' राजस्थानी भाषा का व्यंजन है, इसका उच्चारण 'ल' से कुछ अलग है। आपकी स्थानीय बोली में भी ऐसे शब्द काम में आते हैं, उन शब्दों की सूची बनाइए–

यह भी करें

1 राजस्थान के मानचित्र में कविता में उल्लेखित नगरों को प्रदर्शित कीजिए।

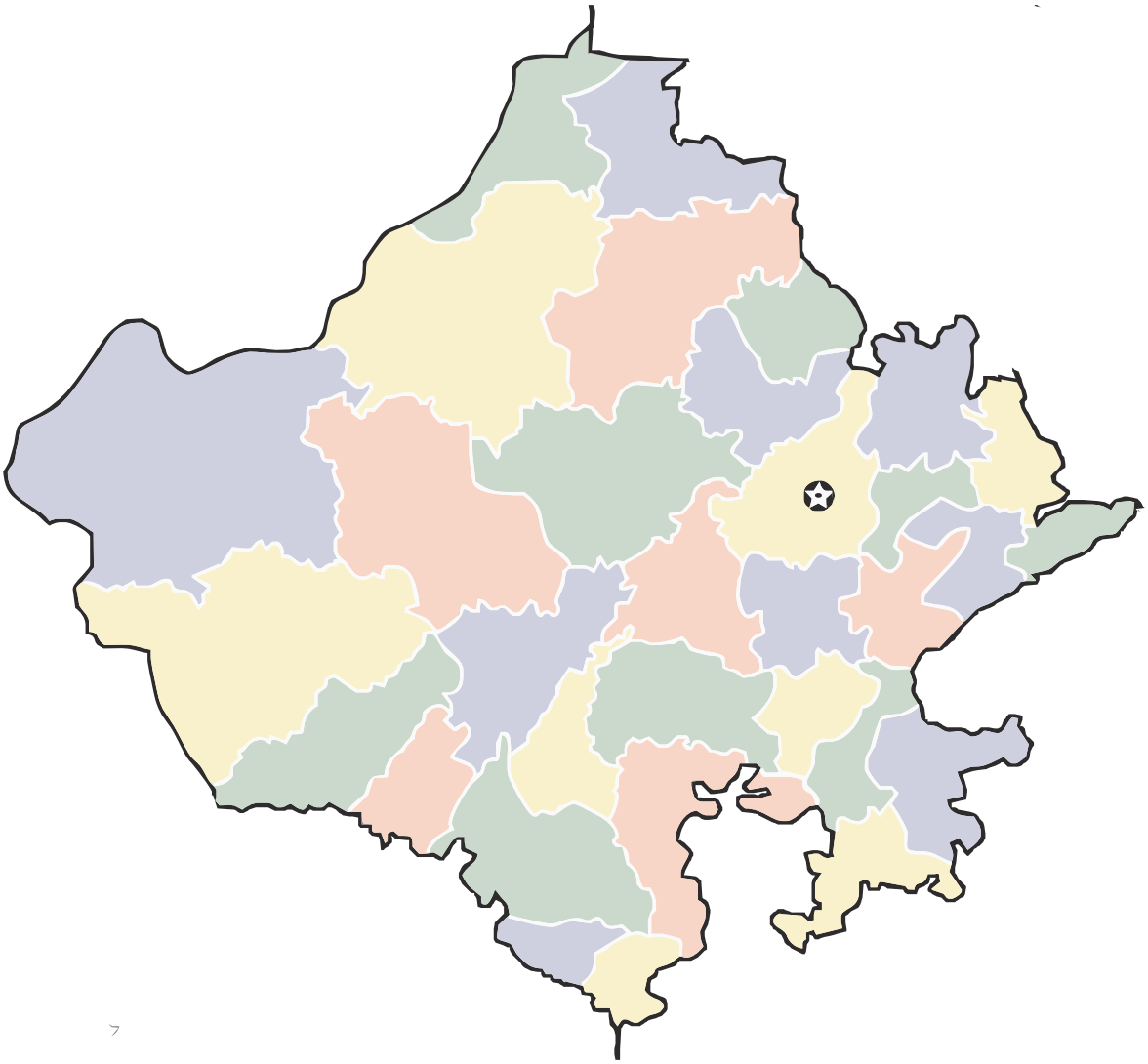

अध्याय 8

चंबल की कहानी

मैं चंबल हूँ। विंध्याचल पर्वत की जनापाव पहाड़ी मेरा घर है। यह स्थान मध्यप्रदेश के इंदौर ज़िले में मऊ के पास है। मैं यहाँ से निकली तो यह नहीं सोचा था कि रास्ता इतना दुर्गम होगा! कितने गाँव–शहर मेरे अपने होंगे। मैं छोटी–सी धार सरसराती निकल पड़ी। पहाड़ों के कठिन जीवन का थोड़ा अनुभव था, लेकिन मैदान व घाटी की निर्जनता का भान नहीं था। लोगों का प्यार और स्नेह मिलता गया, मैं बढ़ती गई। किसी की मेरे घरघराते प्रवाह को देखकर सिट्टी–पिट्टी गुम हो गई तो कोई अभावों की दुनिया में आशा की एक किरण के रूप में मुझे देख रहा था। मध्यप्रदेश के मंदसौर ज़िले में सर्वप्रथम मेरी घेराबंदी की गई। नाम दिया–गाँधीसागर बाँध। लगा कि अब बस मेरी इतिश्री हो जाएगी, लेकिन मुझे अपने पिता विंध्याचल से मिली यह सीख याद आ गई–

चरैवेति चरैवेति यही तो मंत्र है अपना।

सतत चलना, नहीं रुकना, शुभंकर मंत्र है अपना।

मैंने हिम्मत नहीं हारी और आगे बढ़कर चित्तौड़गढ़ ज़िले के चौरासीगढ़ में राजस्थान की पवित्र भूमि का स्पर्श किया। मेरा जीवन वीरान जंगलों, भरकाओं और डाँग क्षेत्रों में समाया हुआ है। इन वीरानियों में मैंने शेर, भालू, चीते, जरख, मगरमच्छ और घड़ियालों के बीच उजड़ते और बसते लोगों को देखा है। कभी गरजती बंदूकों की खौफ़नाक जिंदगियों ने मुझे घेरा तो कभी बॉलीवुड की जमात ने मुझे फिल्मों के पर्दे पर दिखाकर कुतूहल का विषय बनाया।

मुख्यधारा से भटके जन मेरी शीतलता पाकर सात्विक जीवन में लौटे। आज भी अनेक परिवार मेरी क्रोड़ में शहर की चकाचौंध से दूर जीवन जी रहे हैं। मैं अपनी वीरानी के बीच उन्हें बढ़ते देखना चाहती हूँ। बन्दूक की जगह कलम देखकर मुझे खुशी होती है। मैंने अपने मार्ग में ऊबड़–खाबड़ धरातल, टेढ़े–मेढ़े रास्तों से कभी भय नहीं खाया। धैर्य नहीं छोड़ा। युग बदला, शासन बदला, पुल बने, मार्ग सुगम हुए।

मैंने रावतभाटा को परमाणु नगरी बनते देखा है। चित्तौड़गढ़ ज़िले की भैंसरोडगढ़ तहसील में मेरा जल राणा प्रताप का नाम पाकर धन्य हो गया। मुझे गर्व है कि यहाँ बना बाँध राजस्थान का सबसे बड़ा बाँध है। जवाहर सागर व कोटा बैराज भी मेरे अपने ही हैं। मैं जंगल की रानी थी, लेकिन भैंसरोड़गढ़ में मेरे तट पर सुंदर जल दुर्ग बना तो मैं फूली नहीं समायी। भैंसरोड़गढ़ किला राजस्थान का 'बैल्लौर' कहलाता है। मुझे राजस्थान के छह ज़िलों का अक्षुण्ण साथ मिला है। ये ज़िले हैं – चित्तौड़गढ़, बूँदी, कोटा, सवाईमाधोपुर, करौली व धौलपुर। इतने मित्रों को पाकर मैं अपना घर छोड़ने का दर्द भूल गई। मुझे अनेक सहेलियों ने अपने अकूत जल का उपहार देकर मालामाल कर दिया। बामनी, सीप, मेज, कुराल, घोड़ा पछाड़, कुन्नू, पार्वती, परवन, आहू, कालीसिंध और बनास के इस उपकार को मैं भूली नहीं हूँ पर आज इनकी सूखी धारा मुझे विचलित करती है। अब मैं चाहती हूँ कि इनकी मदद का समय आ गया है। मुझे इनसे जोड़कर आप इनको भी सदानीरा कर सकते हैं। भैंसरोडगढ़ के अलावा कोटा, केशोरायपाटन, पालीधाम, रामेश्वरधाम, धौलपुर जैसे स्थान मेरे किनारे पर बसे तो मेरा जीवन सरस हो गया। मेरे लिए कोटा में उद्यान बनाया गया। यहाँ खिलते फूल, मुस्कुराते चेहरे, उड़ती तितलियाँ व चहकते पक्षी मेरा स्वागत करते हैं। मुझे कोटा बैराज में एक बार फिर कैद किया, लेकिन जब मैंने देखा कि मेरी इस कैद से दूसरों का कायाकल्प हो रहा है तो मैं अपना दर्द भूल गई। मेरा पानी नहरों में गया तो खेती लहराई। प्यासे को मिला तो प्यास बुझी। बाढ़ की विभीषिका थमी। बिजली से घर रोशन हुए। मुझे रहीम याद आ गए–

तरवर फल नहीं खात है, सरवर पिए न पान।
कहै रहीम पर काज हित, सम्पति संचै सुजान।।

केशोरायपाटन में केशव जी व मुनि सुव्रतनाथ के दर्शन तथा अजीज मक्की साहब की दरगाह होती हुई मैं पालीधाम व रामेश्वरधाम तीर्थ पहुँची। पालीधाम में झरैल के

बालाजी व रामेश्वरधाम में चतुर्भुजनाथ जी का आशीष मिला। सवाईमाधोपुर का रामेश्वरधाम त्रिवेणी, सीप व बनास के अथाह समर्पण का परिचायक है। धौलपुर ज़िले में कुदिन्ना गाँव में बाबू महाराज के थान की घंटियों से मेरा मन भक्ति से आप्लावित हो उठता है। धौलपुर में चंबल सफ़ारी में नौका विहार करते पर्यटक मेरे खौफ़नाक जीवन पर सरसता व आनंद की विजय है। आज भी अनेक गाँवों की सूखी धरती व प्यासे लोगों को देखकर मेरा गला भर जाता है। सवाईमाधोपुर व भरतपुर ज़िलों के अलावा करौली व धौलपुर ज़िलों में भी लिफ्ट योजना द्वारा मेरे जल से हरियाली आ जाए तो मैं इसे अपने जीवन की सार्थकता मानूँगी।

बरसात के दिनों में पूरे क्षेत्र का पानी उमड़ पड़ता है तो मैं तनिक अहंकारी और अमर्यादित हो जाती हूँ। मेरा यह वेग बाढ़ का रूप धारण कर लेता है। इसके लिए मुझे दोषी ठहराने से पूर्व मनुष्य को अपनी गलतियों के बारे में भी सोचना चाहिए। पेड़ों की अंधाधुंध कटाई व अवैध खनन ने भी मुझे उग्र किया है। खतरे के निशान से ऊपर आते ही आप को सावधान हो जाना चाहिए। जब मेरा वेग प्रचण्ड होता है तो दुखांतिका घटित हो जाती है। इससे मुझे अपार पीड़ा होती है। आपकी सजगता मुझे इस कलंक से बचा सकती है।

राजस्थान व मध्यप्रदेश के बीच लगभग 250 किलोमीटर की सीमा में मुझे जो प्यार व स्नेह मिला उसे मैं भुला नहीं सकती। मुझे 'चंबल मैया' कहा जाता है। मैं माँ का दर्जा पाकर धन्य हो गई। मैं अपनी संतति के लिए सब कुछ देने को तैयार हूँ। लिफ्ट लगाकर मेरा जल कहीं भी ले जाओ, बाँध बनाकर बिजली बनाओ या उद्योग, खेती और उद्यानों को सिंचित करो, परंतु माँ के अस्तित्व के लिए एक विनती है कि कल–कारखानों के अपशिष्ट पदार्थ, शहर के गंदे नाले, मृत जानवरों के शव आदि मुझमें मत फेंको। इनसे मेरा दम घुटता है। मेरी सखियाँ इसी बीमारी से दम तोड़ रही हैं। शास्त्रों में कहा गया हैं कि जो धर्म की रक्षा करते हैं धर्म उनकी रक्षा करता है। आप मेरी रक्षा करेंगे तो, मैं आपकी रक्षा करूँगी। उपकार करोगे तो, मैं सदैव कृतज्ञ रहूँगी।

आपके प्यार और सद्भाव ने मुझ छोटी–सी धारा को लगभग 965 किमी. तक जाने का जो हौंसला दिया उसी से मैं यमुना तक पहुँची हूँ। उत्तरप्रदेश के इटावा ज़िले के मुरादगंज में यमुना बहन से मिलकर मेरे आँसू छलक पड़े। अपने प्रियतम सागर तक मेरा नीर निर्मल बना रहे, यह तो केवल आपके ही हाथ में है।

अभ्यास कार्य

शब्दार्थ

भरकाओं – नदी के किनारे की बंजर व ऊबड़–खाबड़ भूमि, बीहड़

क्रोड़ – गोद

सदानीरा – जिस नदी में हमेशा पानी रहे।

उच्चारण के लिए

विंध्याचल, दुर्गम, चरैवेति, क्रोड़, आप्लावित, अक्षुण्ण

सोचें और बताएँ

1. राणा प्रताप बाँध किस स्थान पर बनाया गया है ?
2. मध्यप्रदेश में चंबल नदी पर कौनसा बाँध बनाया गया है ?
3. राजस्थान का बैल्लोर किसे कहा गया है ?

लिखें

उचित विकल्प चुनकर कोष्ठक में लिखिए–

1. चंबल नदी का उद्‌गम स्थान है–

   (क) मध्यप्रदेश (ख) राजस्थान

   (ग) उत्तर प्रदेश (घ) पश्चिमी बंगाल ( )

2. चम्बल नदी रावतभाटा को बनते देखा है–

   (क) परमाणु नगरी (ख) झीलों की नगरी

   (ग) अभयारण्य (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं( )

रिक्तस्थान भरिए–

1. चंबल राजस्थान में सर्वप्रथम .....जिले में प्रविष्ट होती है।
2. राजस्थान के ..... जिलों में चम्बल नदी बहती है।
3. सवाईमाधोपुर का रामेश्वर धाम त्रिवेणी में ..... नदियों का संगम है।

कथन के सामने सही (✓) या गलत (×) का निशान लगाइए–

(क) चंबल नदी विंध्याचल पर्वत से निकलती है। ( )

(ख) चंबल नदी चित्तौड़गढ़, बूँदी, धौलपुर और भरतपुर में बहती है। ( )

(ग) रावतभाटा में परमाणु विद्युतगृह है। ( )

मिलान कीजिए–

बाँध	जिला जहाँ निर्मित है।
राणा प्रताप सागर	मंदसौर
गाँधी सागर	कोटा
कोटा बैराज	चित्तौड़

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. राजस्थान का सबसे बड़ा बाँध कौन–सा है?
2. बाँधों से हमें क्या–क्या लाभ हैं ?
3. नदियों के दूषित होने के कारण लिखिए।

भाषा की बात

- 'प्रदूषित' शब्द 'प्र' और 'दूषित' से बना है। यहाँ 'प्र' उपसर्ग है और दूषित 'शब्द'। उपसर्ग शब्द के प्रारंभ में जुड़ता है। आप भी ऐसे शब्दांश जोड़कर शब्द बनाइए और उनका अर्थ लिखिए।

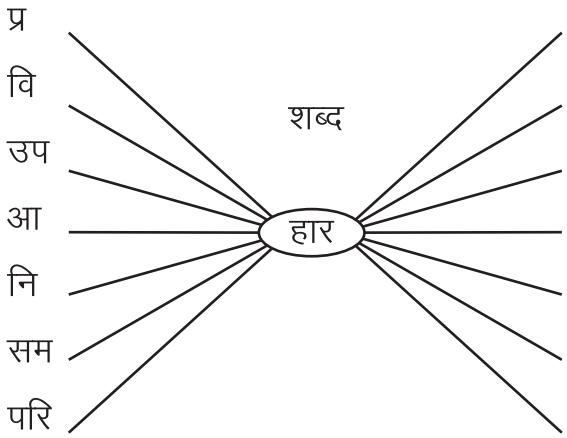

उपसर्ग	नए शब्द	अर्थ
प्र	प्रहार	वार करना
वि	.....	घूमना
उप	.....	.....
आ	.....	.....
नि	.....	देखना
सम	संहार	.....
परि	.....	.....

- **नीचे लिखे मुहावरों का अर्थ लिखकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए–**

मालामाल करना धन्य होना

कायाकल्प होना दम तोड़ना

- मैंने अपने मार्ग में ऊबड़– खाबड़ धरातल, टेढ़े– मेढ़े रास्तों से कभी भय नहीं खाया। इस वाक्य में रेखांकित शब्द विशेषण हैं जो 'धरातल' व 'रास्तों' की विशेषता बता रहे हैं। ऐसे शब्द जो संज्ञा एवं सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, वे विशेषण कहलाते हैं तथा जिन शब्दों की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेष्य कहते हैं।

आप भी पाठ में से विशेषण–विशेष्य शब्द छाँटकर लिखिए–

विशेषण	विशेष्य
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....

- 'परमाणु' शब्द 'परम' व 'अणु' शब्दों से मिलकर बना है। इसमें 'परम' शब्द की अन्तिम ध्वनि 'अ' व 'अणु' शब्द की प्रथम ध्वनि 'अ' मिलकर 'आ' हुआ है। ध्वनियों के मेल से होने वाला परिवर्तन ही 'सन्धि' कहलाता है।

सन्धि के तीन भेद होते हैं –

1. स्वर सन्धि 2. व्यंजन सन्धि 3. विसर्ग सन्धि

स्वर सन्धि – जब स्वर के साथ स्वर के मेल से परिवर्तन होता है, तो इसे 'स्वर सन्धि' कहते हैं; जैसे –

विद्यालय – विद्या + आलय

रवीन्द्र – रवि + इन्द्र

भानूदय – भानु + उदय

आप भी निम्नलिखित शब्दों को जोड़कर नये शब्द बनाइए –

हिम + आलय .....

गिरि + ईश .....

सु + उक्ति .....

यह भी करें

- 1. आपके आस–पास जल के कौन–कौन से स्रोत हैं? लिखिए।
  2. इनका पानी आपके किस–किस काम में आता है ?
  3. इन स्रोतों के पानी को दूषित होने से कैसे बचाया जा सकता है ? लिखिए।
- **नीचे दिए गए स्थानों की सफाई के लिए आप क्या–क्या करेंगे / करेंगी।**

घर	गली–मोहल्ला
स्कूल	सड़क
गाँव	नाली